

इकाई 5: हरी-भरी दुनिया

17



0122CH17

आनंदमयी कविता

हवा

ऊपर-नीचे दाएँ-बाएँ,
हवा चली साँय-साँय।
मुन्नी को छेड़कर,
चढ़ गई पेड़ पर।
हाथ नहीं आऊँगी,
दूर मैं उड़ जाऊँगी।
मुन्नी बोली हँसकर,
हवा रानी बस करा।
पकड़ तुझे मैं लाऊँगी,
फुगों में ले जाऊँगी।

— शिवचरण सरोहा



चित्रकारी



मान लीजिए कि मुन्नी ने हवा से भरे फुगो आपको दे दिए। आप उन फुगों से क्या करेंगे? सोचिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए –

कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं, आप उनमें से भी शब्द चुन सकते हैं।

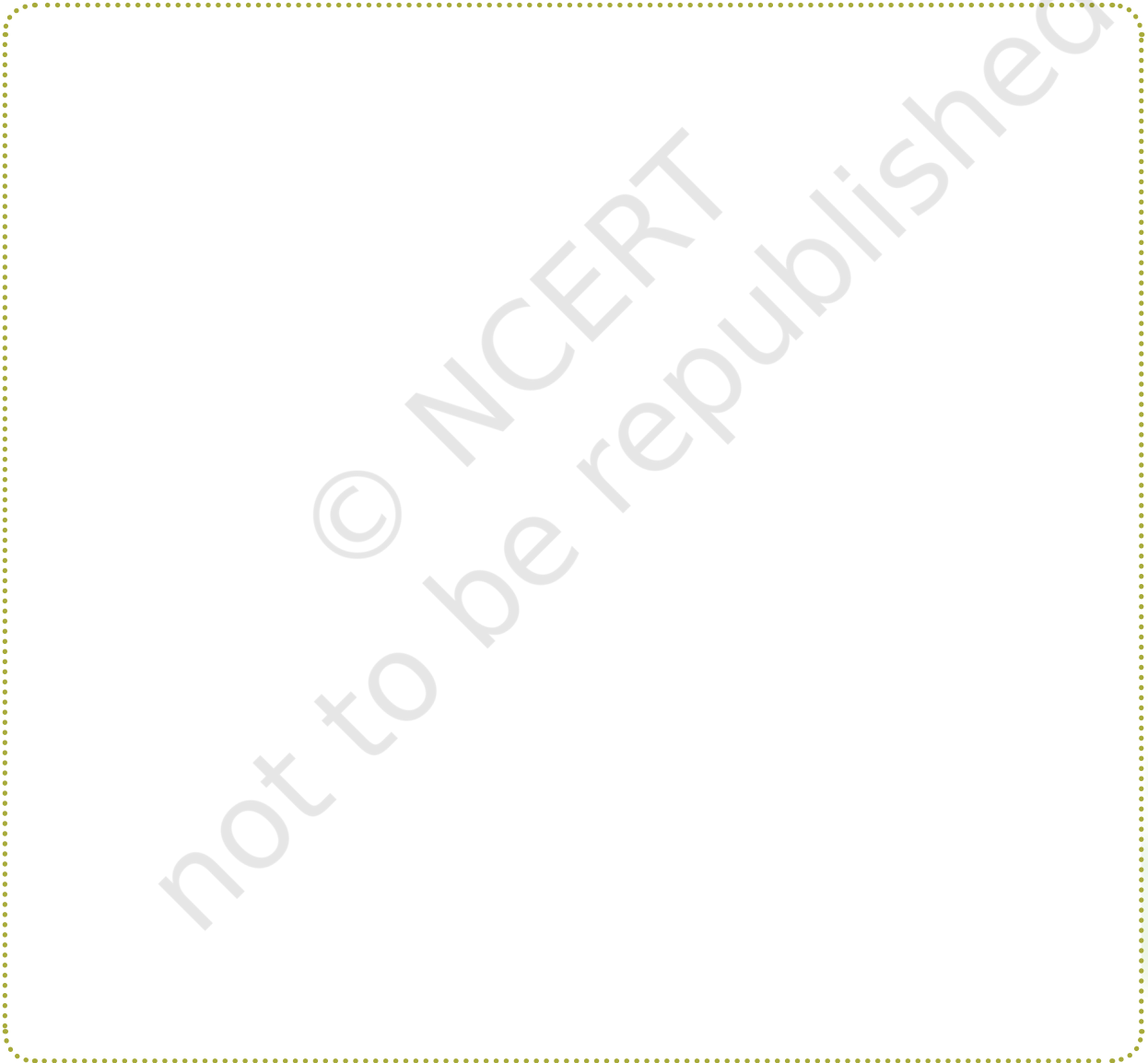
हवा

फुगा

गुब्बारा

खेल

मुन्नी



95

चित्र में देखकर बताइए कि मुन्नी के बाईं ओर, दाईं ओर, उसके आगे और उसके पीछे क्या-क्या दिख रहा है –



मुन्नी के दाईं ओर –, ...

मुन्नी के बाईं ओर –, ...

मुन्नी के आगे –, ...

मुन्नी के पीछे –, ...



भूल-भुलैया



घोड़े को जंगल तक पहुँचाइए। यह घोड़ा केवल 'ओ' के रास्ते पर ही चलता है और अन्य अक्षरों पर रुक जाता है।



ओ	औ	ओ	क	औ	ज
औ	ओ	औ	ट	औ	प
ओ	स	म	औ	र	ल
छ	ओ	औ	ठ	न	अ
ब	औ	ओ	ओ	क	झ
थ	ग	व	च	ओ	ओ

